नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पारदर्शी हो धार्मिक स्थलों की व्यवस्था

देश के प्रमुख धार्मिक स्थल केवल आस्था के केंद्र नहीं हैं, बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं के विश्वास और सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक भी हैं. अयोध्या का श्रीराम मंदिर, अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, उज्जैन का महाकालेश्वर,काशी विश्वनाथ, मथुरा, वैष्णो देवी, सबरीमाला, तिरुपति का श्री वेंकटेश्वर मंदिर और अजमेर की विश्व प्रसिद्ध दरगाह जैसे स्थलों पर प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं.

इन धार्मिक स्थलों पर श्रद्धालुओं द्वारा अर्पित दान केवल धनराशि नहीं होता, बल्कि उनकी श्रद्धा, विश्वास और समर्पण का प्रतीक होता है. इसलिए इन संस्थानों की व्यवस्था पूरी तरह पारदर्शी, जवाबदेह और आधुनिक होनी चाहिए. बहरहाल, अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में दानपात्र से चढ़ावे में कथित गबन का मामला अत्यंत गंभीर है. यह केवल आर्थिक अनियमितता नहीं, बल्कि करोड़ों रामभक्तों की आस्था से जुड़ा विषय है. ऐसे मामलों में किसी भी प्रकार की ढिलाई न केवल संबंधित संस्था की प्रतिष्ठा को प्रभावित करती है, बल्कि पूरे धार्मिक तंत्र पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर देती है.

संतोष की बात यह है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने इस मामले को हल्के में नहीं लिया. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शिकायत सामने आने के बाद विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन कर निष्पक्ष जांच के निर्देश दिए. जांच के दौरान वित्तीय प्रक्रियाओं में गंभीर खामियां सामने आईं और नियमों के उल्लंघन का खुलासा हुआ. इसके बाद पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार किया तथा नकदी भी बरामद की. इससे स्पष्ट संदेश गया कि चाहे मामला कितना भी संवेदनशील क्यों न हो, कानून से ऊपर कोई नहीं है.

योगी आदित्यनाथ सरकार का यह रवैया इसलिए भी सराहनीय है क्योंकि उसने मामले को दबाने या टालने के बजाय जांच को प्राथमिकता दी. यदि किसी धार्मिक संस्था में भ्रष्टाचार या अनियमितता के आरोप सामने आते हैं तो उनकी निष्पक्ष जांच ही उस संस्था की विश्वसनीयता को बचा सकती है. दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई से श्रद्धालुओं का विश्वास और मजबूत होता है, कमजोर नहीं. साथ ही, यह भी उल्लेखनीय है कि ट्रस्ट ने स्वयं जांच में सहयोग किया और श्रद्धालुओं को यह भरोसा दिलाया कि बहुमूल्य आभूषण एवं अन्य चढ़ावे सुरक्षित हैं. इससे यह संदेश भी जाता है कि पारदर्शिता अपनाने से संस्थाओं की गरिमा बढ़ती है.

अब समय आ गया है कि देश के सभी बड़े धार्मिक स्थलों पर दान प्रबंधन की व्यवस्था पूरी तरह तकनीक आधारित बनाई जाए. दानपात्रों की निगरानी, सीसीटीवी फुटेज का सुरक्षित संरक्षण, नियमित ऑडिट, डिजिटल रिकॉर्ड, स्वतंत्र लेखा परीक्षण और समय-समय पर सार्वजनिक वित्तीय विवरण जैसी व्यवस्थाएं अनिवार्य की जानी चाहिए. इससे न केवल अनियमितताओं पर रोक लगेगी, बल्कि श्रद्धालुओं का भरोसा भी और मजबूत होगा.

धार्मिक संस्थाओं की प्रतिष्ठा उनकी भव्यता से नहीं, बल्कि उनकी ईमानदार और पारदर्शी व्यवस्था से बनती है. श्रद्धालु जिस विश्वास के साथ अपना अर्पण करते हैं, उसकी रक्षा करना ट्रस्टों और प्रशासन दोनों की सर्वोच्च जिम्मेदारी है. अयोध्या की घटना एक चेतावनी भी है और एक अवसर भी कि देश के सभी प्रमुख धार्मिक स्थलों की व्यवस्थाओं की समयबद्ध समीक्षा हो तथा पारदर्शिता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए. आस्था तभी अक्षुण्ण रहेगी, जब उसके साथ ईमानदारी और जवाबदेही भी उतनी ही दृढ़ता से जुड़ी होगी.

भारत और खाड़ी संकट | सब कुछ स्थिर और सामान्य

वी. अनंत नागेश्वर

जब फरवरी के अंत में हवाई हमलों के कारण हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य बंद हो गया — ऐसा समुद्री मार्ग जिससे होकर दुनिया के कच्चे तेल का करीब एक-पांचवां हिस्सा और भारत के कच्चे तेल और खाना पकाने के गैस का अधिकांश हिस्सा गुजरता है — तो भारत के लिए कहानी पहले ही लिखी हुई लग रही थी. एक ऐसा देश, जो अपने कच्चे तेल का दस में से नौ हिस्सा और आधे से ज्यादा खाना पकाने के गैस का खाड़ी से आयात करता है, उसके लिए आम तौर पर यही उम्मीद की जा रही थी कि पेट्रोल पंपों पर लंबी कतारें लगेंगी, रसोई में गैस खत्म हो जाएगी, रुपये की कीमत गिरेगी और डॉलर के लिए होड़ मचेगी.

> भारत को उन चीज़ों का उत्पादन देश में ही करना चाहिए जिन्हें वह प्रतिस्पर्धी ढंग से बना सकता है और जिनकी उसे ज़रूरत है .देश की कंपनियों और व्यापार संघों को अपने समझौतों पर ज्यादा मेहनत करना होगा — खासकर यूनाइटेड किंगडम और यूरोपीय संघ के नए समझौते, जो इस साल लागू होंगे और श्रम-गहन निर्यात को बढ़ावा देंगे. यह सब कुशल लोगों के बिना संभव नहीं है, इसलिए युवाओं को व्यापार से जुड़े कौशल सिखाने का काम अब युद्ध स्तर पर किया जाना चाहिए. इन कामों के लिए लगन और तेज़ी की ज़रूरत होगी. इन पर ध्यान देते हुए, सरकार को दक्षिण-पश्चिम मॉनसून पर भी ध्यान देना होगा जिसने अब तक निराश किया है, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आगमन पर भी विचार करना होगा कि भारतीय काम और भारतीय जीवन के लिए इसके मायने क्या होंगे. खाड़ी संघर्ष ने एक प्रकार की सहनशीलता की परीक्षा ली; आने वाले साल दूसरे प्रकार की परीक्षाएं लेंगे. भारत ने पहली परीक्षा को अच्छे ढंग से पूरा किया. यह आत्मविश्वास का एक कारण है — और अगले काम में लगने का भी कारण है.

लगभग चार महीने बाद, जब जलडमरूमध्य फिर से खुल गया और कच्चे तेल की आपूर्ति अपने संकट-पूर्व स्तर के करीब पहुँच गयी, तो इनमें से कुछ भी नहीं हुआ. एक भी रिटेल आउटलेट बंद नहीं हुआ. जिस भी परिवार को सिलेंडर चाहिए था, उसे सिलेंडर मिल गया. भारत को न तो 1991 जैसे और न ही 2013 जैसे हालात का सामना करना पड़ा. व्यापक आर्थिक स्थिरता बनी रही. यह कोई संयोग नहीं था और न ही यह सिर्फ़ किस्मत की बात थी. यह एक ऐसे सरकार का काम था, जिसने वही तरीका अपनाया, जो उसने महामारी के समय अपनाया था — जानबूझकर और धीरे-धीरे कदम उठाना, एक ही बार में कोई बड़ा या नाटकीय बदलाव करने के बजाय एक उपाय के ऊपर दूसरे उपाय को जोड़ना. पहली प्राथमिकता घर-परिवार थे. इस पूरी अवधि के दौरान, एक भी रिटेल आउटलेट का स्टॉक खत्म नहीं हुआऔर हर रसोईघर में सिलेंडर मौजूद रहा. आयात से जुड़ी लागत के कारण 14.2 किलोग्राम वाले सिलेंडर की कीमत 1,600 रुपये से ऊपर चली गई थी, फिर भी घरों के लिए इसकी कीमत 900 रुपये के आसपास ही रखी गईऔर सबसे गरीब लोगों के लिए तो यह कीमत और भी कम थी. महामारी के शुरुआती महीनों की यादें एक सबक थीं, जब प्रवासी मजदूरों में मची घबराहट के कारण गांवों की ओर लौटने वालों की लहर चल पड़ी थी.वाणिज्यिक और थोक उपयोगकर्ताओं को घरों की जरूरत को प्राथमिकता देने के लिए कहा गया.

पूरी अर्थव्यवस्था को चलाने वाले ईंधन के मामले में, सरकार ने इसका बोझ खुद उठाने का फ़ैसला किया, न कि इसे आम लोगों पर डाला. सरकार ने पेट्रोल और डीज़ल पर उत्पाद शुल्क में दस रुपये प्रति लीटर की कटौती की, जिससे उसे लगभग 1.7 लाख करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान हुआ, इसके अलावा विमानन ईंधन पर भी बोझ कम किया गया. इसके बाद तेल विपणन कंपनियों ने दो महीने से ज़्यादा समय तक पंप पर कीमतें स्थिर रखीं और फिर एक बार मामूली बदलाव किया. इसके पीछे की वजह साफ़ है- ऐसी अनिश्चितता के समय में, सिर्फ़ सरकार के पास ही जोखिम उठाने के लिए ज़रूरी बैलेंस शीट और समय होता है; और इसने परिवारों और कंपनियों पर असर डालने के बजाय राजकोषीय खाते पर बोझ डालने का विकल्प चुना. एयरलाइंस के लिए खास समर्थन तथा सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए ऋण-गारंटी योजना, कोविड के दौर में अपनाए गए खास और असरदार उपायों के मॉडल पर ही आधारित थीं.

कीमत में राहत के पीछे आपूर्ति की मजबूत स्थिति थी. घरेलू रिफाइनरियों ने एक हफ्ते में ही रसोई गैस का उत्पादन आधा बढ़ा दिया, जिससे आयात से आने वाली गैस की कमी काफी हद तक पूरी हो गई. भारत ने जल्दी ही अपने स्रोतों का विस्तार किया, अमेरिका और रूस से खरीद बढ़ायी और नए आपूर्तिकर्ता देश जोड़े, ताकि जलडमरूमध्य से होकर कम ऊर्जा आये; साथ ही रूसी कच्चा तेल खरीदना जारी रखने के लिए जरूरी छूट भी हासिल कर ली. सरकार ने लंबी अवधि के लिए भी कदम उठाए- घरों को सिलेंडर के बदले पाइप से गैस पहुँचाना, कोयले गैसीकरण कार्यक्रम, ईथेनॉल मिश्रण को और बढ़ावा देना तथा प्रधानमंत्री की संयुक्त अरब अमीरात यात्रा के दौरान रणनीतिक तौर पर कच्चा तेल भंडारण पर सहमति.

(लेखक भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार हैं. ये उनके निजी विचार हैं.)

दिल्ली डायरी

सरकार नहीं तो संगठन में ही कुर्सी पाने की होड़

प्रवेश कुमार मिश्र

केन्द्रीय मंत्रिमंडल में होने वाले फेरबदल और भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन की नई टीम की घोषणा आगे पीछे ही होना तय माना जा रहा है . ऐसे में कई मौजूदा मंत्री अपनी कुर्सी के अनिश्चित भविष्य को देखते हुए संगठन में स्थान पाने की कोशिश कर रहे हैं.

चर्चा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जब से मंत्रियों के रिपोर्टकार्ड पर व्यापक चर्चा और समीक्षा आरंभ की है उसके बाद से यह कहा जाने लगा है कि कई मंत्रियों की छुट्टी तय है. संभवत: इसकी आहट भांपकर पिछले दिनों कई राज्य मंत्रियों ने संघ व भाजपा के वरिष्ठ रणनीतिकारों के घरों के चक्कर लगाना आरंभ कर दिया है. ऐसे मंत्रियों का प्रयास है कि कुर्सी कहीं भी सुरक्षित रह जाए.

राम मंदिर चढ़ावा चोरी भाजपा के गले की हड्डी बनी

राम मंदिर चढ़ाव चोरी मामले में जैसे-जैसे नए खुलासे हो रहे हैं उसी रफ्तार में एक तरफ विपक्षी नेता आक्रामक होते जा रहे हैं और दूसरी ओर भाजपाई प्रवक्ता बैकफुट पर आते दिख रहे हैं. इस पूरे प्रकरण पर दिल्ली में भी एक अलग किस्म की खामोशी दिख रही है.

चर्चा है कि संघ व भाजपाई रणनीतिकारों ने जनभावनाओं को ध्यान में रखते हुए फिलहाल किसी के बचाव को लेकर ज्यादा कुछ बोलने से परहेज़ करने का निर्णय लिया है. चंपत राय जैसे ट्रस्ट के न्यासियों पर सीधे तौर पर लग रहे आरोपों से संघ सबसे ज्यादा निराश है.

चर्चा है कि भाजपा व संघ के रणनीतिकारों ने आरोप प्रत्यारोप के दलदल में फंसने के बजाय पुलिस व एसआईटी के अंतिम निष्कर्ष सामने आने तक आक्रामक प्रतिकार नहीं करने का सुझाव दिया है. हालांकि उत्तर प्रदेश में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव पर इस खुलासे का कितना असर पड़ेगा इसको लेकर पार्टी जमीनी आंकलन के प्रयास में है.

कांग्रेस संगठन में नया जोश भरने की कोशिश

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कांग्रेस संगठन में नया जोश भरने के लिए बहुस्तरीय रणनीति बनाकर सांगठनिक ढांचे को पुनर्गठिन करना आरंभ कर दिया है. पार्टी ने पहली बार संगठन में बहुजन विचार को आधार बनाकर चुनावी रणनीति को रेखांकित करते हुए दलित, ओबीसी, ईबीसी वर्ग के नेताओं को आगे लाना आरंभ किया है. चर्चा है कि राहुल गांधी की विशेष सलाह पर आक्रामक अंदाज में अपनी बात को रखकर विरोधियों को घेरने में आगे रहे नेताओं को विशेष महत्व देना आरंभ किया गया है.

अपेक्षाकृत तकनीकी रूप से संपन्न व छात्र राजनीति से आने वाले युवाओं को मौका देकर पार्टी पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं को साधने की तैयारी में है. चर्चा है कि वरिष्ठ नेताओं को एकबार फिर से चुनावी रणनीति के तहत अपने अपने क्षेत्र की ओर लौटकर चिन्हित सीटों को पार्टी के लिए सुरक्षित करने के लिए कहा जा रहा है ताकि 2029 में परिणाम को अपने पक्ष में किया जा सके.

इंडिया गठबंधन में फिर शामिल हो सकता है डीएमके

तमिलनाडु के राजनीतिक समीकरण में आए बदलाव के बाद इंडिया समूह और खासकर कांग्रेस पार्टी से नाराज़ हुए डीएमके को पुनः इंडिया समूह में लाने का प्रयास आरंभ कर दिया गया है. चर्चा है कि टीएमसी व शिवसेना उद्धव गुट के बिखराव के अनुभव को आधार बनाकर डीएमके के रणनीतिकार भी एकजुट समूह के साथ रहने को मजबूरी के साथ ही सही लेकिन मजबूती मान रहे है. कहा जा रहा है कि दोनों दलों के शीर्ष नेताओं के बीच टेलिफोनिक संवाद आरंभ हो गया है. कांग्रेस की ओर से डीएमके को स्थानीय राजनीतिक परिदृश्य का हवाला देकर मनाने का प्रयास किया जा रहा है.

यूरोप में जानलेवा हो गई गर्मी

बदलते मौसम चक्र और पर्यावरण से खिलवाड़ का खौफनाक नतीजा सामने आ रहा है. यूरोप में ठंड की बजाय गर्मी का तांडव चरम पर है. फ्रांस में गर्मी से 1,000 से ज्यादा लोगों की मौत की खबर दुखद के साथ चौंकाने वाली भी है. पश्चिमी गोलार्ध में एशियाई देशों के समान गर्मी नहीं पड़ती थी, लेकिन अब मौसम का मिजाज बदल गया है. क्या रूस-यूक्रेन युद्ध और इजराइल व अमेरिका के ईरान से युद्ध में प्रयुक्त घातक मिसाइलों व बमों की वजह से दुनिया का मौसम प्रभावित हुआ है? इस बारे में पर्यावरणविद या वैज्ञानिक ही बता सकते हैं. भारत के लोग 45 डिग्री सेल्सियस या 113 डिग्री फैरनहीट तापमान भी बर्दाश्त कर लेते हैं लेकिन ठंडे मुल्कों में रहने वालों को गर्मी का अनुभव नहीं है, 40 डिग्री तापमान भी जानलेवा हो जाता है. बुजुर्ग इसके पहले शिकार होते हैं, क्योंकि उनके शरीर की प्रतिकार शक्ति कम हो जाती है. फ्रांस में हुई कुल मौतों में 85 प्रतिशत लोग 65 वर्ष या अधिक आयु के हैं. यूरोप में जो मकान बनाए जाते हैं, उनका निर्माण ठंड में गर्म रहने के उद्देश्य से होता है. मोटी दीवार व छोटी खिड़कियां होती हैं. घर गर्म रखने के लिए सेंट्रल हीटिंग सिस्टम रहता है. वहां एसी का उपयोग नहीं के बराबर है. जर्मनी व ब्रिटेन में 1 प्रतिशत घरों में भी एसी नहीं है. लोग पानी कम पीते हैं. सॉफ्ट ड्रिंक या अल्कोहलिक ड्रिंक का चलन ज्यादा है. ग्रीष्म लहर से परेशान लोग वॉटर पार्क जैसी जगहों पर जा रहे हैं. यूरोप के जो लोग अफ्रीका या एशिया घूमने आते रहे हैं, उन्हें अब पहली बार अपने देश में भारी गर्मी और लू चलने के कष्ट का अनुभव हो रहा है. यह एक असामान्य स्थिति है, जिसके लिए सरकार व प्रशासन को सजग होना पड़ा है. विशेषज्ञों की राय में गर्म हवा जब एक क्षेत्र में दीर्घकाल तक अटकी रहती है तो उसे 'ओमेगा ब्लॉक' कहा जाता है. जिन देशों में आम तौर पर बर्फबारी हुआ करती है, वहां इतनी गर्मी पड़ना कुदरत के बदलते तेवर को दर्शा रहा है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

पासपोर्ट पर छपी ट्रंप की तस्वीर शान से चमकाते अपनी तकदीर

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने देश की स्वाधीनता की 250 वीं सालगिरह मनाने के लिए नए लिमिटेड एडीशन अमेरिकी पासपोर्ट पर अपनी तस्वीर छपवाई है. इसे ट्रूथ सोशल प्लेटफार्म पर उन्होंने पोस्ट किया है. 4 जुलाई अमेरिका का स्वाधीनता दिवस है. 1776 में इसी तारीख को अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन ने ब्रिटेन के कब्जे से अपने देश की आजादी घोषित की थी. अंग्रेजों की फौज से उनकी अंतिम और निर्णायक लड़ाई न्यूजर्सी के स्कैंटन में हुई थी. इस नए पासपोर्ट में ट्रंप कठोर मुखमुद्रा में नजर आ रहे हैं. उनकी यह तस्वीर व्हाइट हाउस के फोटोग्राफर डैनियल टोरोक ने खींची है. आजादी के घोषणापत्र के बैकग्राउंड में यह तस्वीर छपी है. उस पर ट्रंप के हस्ताक्षर हैं और छपा है- वेलकम, बट बी गुड! इसका मतलब है- आपका स्वागत है मगर शराफत से रहो. क्या यह शेखीखोर ट्रंप का आत्मविज्ञापन नहीं है?'

हमने कहा, 'यह प्रचारतंत्र की दुनिया है. ट्रंप के चित्र वाला पासपोर्ट विश्व के देशों में उनकी धाक जमाएगा. यह रूस के पुतिन और चीन के शी जिनपिंग के लिए भी चुनौती होगी कि वह अपने देशों के पासपोर्ट पर खुद का चित्र छपवाएं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ट्रंप को चाहने वाले भारत में भी हैं. पुणे में ट्रंप टावर है. हैदराबाद में अमेरिकी वाणिज्य दूतावास से सटी हुई सड़क का नाम डोनाल्ड ट्रंप एवेन्यू रखा गया है. तेलंगाना के उपमुख्यमंत्री मल्लू भट्टी विक्रमार्क, भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर तथा अमेरिका की कांसुल जनरल लॉरा विलियम्स ने इस सड़क के नामकरण की स्मारक पट्टिका का अनावरण किया. हैदराबाद में अपने नाम की सड़क के बारे में जानकर ट्रंप प्रसन्न हो गए. वह अमरीश पुरी की स्टाइल में बोल सकते थे मोगैम्बो खुश हुआ!' हमने कहा, 'विदेशियों और मुगल शासकों के नाम देश की सड़कों व स्मारकों से हटाने वाली केंद्र की मोदी सरकार की ट्रंप एवेन्यू पर क्या प्रतिक्रिया रहेगी?'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ट्रंप को गणतंत्र दिवस समारोह का अतिथि बनाकर और भी ज्यादा सम्मानित किया जा सकता है. मोदी-ट्रंप दोस्ती की कड़ियां फिर से मजबूत करना जरूरी है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12305 - डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1. चमड़ा कमाने का स्थान, वह स्थान या कारखाना जहां विशेष प्रक्रिया द्वारा चमड़े को सिझाकर मुलायम बनाया जाता है, (टैनरी) 6. भ्रांति, भ्रम 7. पानी 9. पागल 11. माला के अभाव में उंगलियों के पोरों से जप की गिनती करना 13. देखना, दिखाई पड़ना 15. जन्म देना, ब्याना 16. दृढ़, पुष्ट, पक्का 18. विपरीत या उलटा अर्थ, बहुत बुरी एवं अनुचित बात, अवैध रीति से प्राप्त धन (सं.) 20. किसी वस्तु को लेने, पकड़ने या किसी पर प्रहार करने के लिए वेग से उसकी ओर बढ़ना 23. लेकिन, पंख25. पीड़ा, वेदना, टीस 26. चमकना या चमकाना 27. उड़ने अथवा रेंगने वाला जंतु

ऊपर से नीचे

1. प्रत्यक्षदर्शी (गवाह), आंखों से देखा हुआ 2. अपने समय की एक प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री 3. धारण करने वाला, पकड़ने की क्रिया या भाव 4. नाम से प्रसिद्ध, नाम धारण करने वाला 5. ब्राम्हणों को दक्षिणा आदि देकर कोई धार्मिक कृत्य करने वाला 8. लोभकरना, ललचना 10. आघात, आक्रमण 12. वह श्वेत पर्दा जिस पर चलचित्र दिखाया जाता है 14. नखरा, घमंड 17. समझ, बुद्धि, पहला 18. अजीर्ण 19. कोमल, लचीला 21. डुग्गी, डुगडुगिया 22. नाक का एक रोग 24. राधिका, काले रंग की गाय, यमुना नदी, सांवले रंग की

Solution 12304

मो	र	छ	ल		त	व	ना
ह	वि		ब	ल	वा	न	
न		सु	ल	ह			बू
भो	ज		बी	र	ब	हू	टी
ग	ग	रा		दा	स्ता	न	
	त	म	च	र		ना	फा
जो		ज	रा		पं		स
श	ह	ना	ई		क	पि	ला

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में राजनैतिक कार्यों में सफलता मिलेगी. नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा. वर्ष के मध्य में तीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी. राज्य सम्मान मिलेगा. प्रभाव में वृद्धि होगी. वर्ष के अन्त में पारिवारिक चिन्ता से मन खिन्न रहेगा. कार्यक्षेत्र में आकस्मिक रूकावटें आयेंगी. धन संकट का सामना करना पडेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को राज्य सम्मान मिलेगा. प्रभाव में वृद्धि होगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को तीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक संकटों का सामना करना पडेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अपनी योजनायें गुप्त रखकर कार्य करना हितकर रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अपनी कार्यक्षमता से कार्य करना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, चतुर, भाग्यवान, तथा परिश्रमी रहेगा, जिस कार्य को ठान लेगा, उसे पूरा करके ही छोड़ेगा, शिक्षा अच्छी होगी, व्यापार और नौकरी दोनों में अच्छी तरक्की करेगा, धार्मिक कार्यों में झुकाव रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

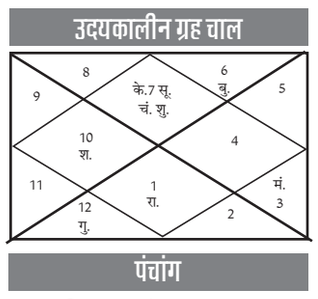

पंचांग

रा.मि. 10 संवत् 2083 आषाढ कृष्ण प्रतिपदा बुधवासरे प्रात: 6/25, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे प्रात: 6/34, ऐन्द्र योगे दिन 4/23, बालव करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार धनु दिन 1/6 से मकर, शु.रा. 9,11,12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक- 2,4,8.

त्यापार भविष्य

आषाढ कृष्ण प्रतिपदा को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड चीनी, में पूर्व की चाल रहेगी, जीरा, धनियां, हल्दी में मंदी होगी, सोना, चांदी, में उतार चढ़ाव रहेगा, वायदा विचार आज जिस कार्य में वस्तु के भाव टूटें उसी में अगले दिन तेजी होगी. भाग्यांक 2607 है.

मेष- सामूहिक कार्य में सभी की सलाह लाभदायक रहेगी, बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, सामाजिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

वृषभ- बातो बातों में नई शुरूआत हो सकती है, जरूरतें पूरी करने उधारी संभव है, पुराने पेंडिंग पड़े कार्य बनेंगे, योजनाओं का विस्तार होगा.

मिथुन- राजकीय मामलों में लापरवाही से नुकसान होगा, शादी विवाह की चर्चा में सफलता मिलेगी, अधूरे कार्यों में गति आयेगी, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी.

कर्क- धार्मिक आयोजन में खर्च होगा, न चाहते हुये भी लोगों की आलोचना झेलना पड़ सकती है, सोचे कार्य बिलंब से होंगे, विवादों का समाधान होगा.

सिंह- कानूनी पक्ष मजबूत होगा, करीबी लोगों के व्यवहार से दुख होगा, मानसिक अस्थिरता रहेगी, नियमित कार्यों में व्यवधान आ सकता है.

कन्या- सुविधा की कमी से कार्य में मुश्किल आयेगी, अनुभव का लाभ मिलेगा, नौकरी राजकीय कार्यों में अच्छा समाचार मिलेगा, रोगी की चिन्ता रह सकती है.

तुला- मतभेद दूर होने से रिश्ते मजबूत होंगे, रूखे व्यवहार से मित्र वर्ग नाराज होगा, पुराना कार्य बनेगा, अचानक धन लाभ होने का योग है.

वृश्चिक- डूबा धन मिलने के आसार है, अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, व्यवसाय से लाभ होगा, नवीन योजना बनेगी. मित्रों से मतभेद हो सकता है.

धनु- सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों से अच्छा लाभ होगा, भूमि भवन मकान आदि के कार्यों में समस्या का समाधान होगा, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मकर- कार्य के संबंध में अनुकूल आश्वासन मिलेंगे, लापरवाही से काम पूरे नहीं होगे, दिदनचर्या नियमित रहेगी, परिश्रम अधिक करना होगा.

कुम्भ- दुविधा की स्थिति में फैसला लेना मुश्किल होगा, गुमी वस्तु मिलने का योग है, पारिवारिक दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी, परिश्रम अधिक करना होगा.

मीन- अपने लोग ही उलझाने का प्रयास कर सकते हैं, मांगलिक कार्य पर विचार होगा, मान सम्मान में वृद्धि होगी, व्यक्ति विशेष की सलाह लेना हितकर रहेगा.

SUDOKU 7437

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7436

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9